जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

बीकानेर

Rashtradoot

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 46 संख्याः 199 प्रभात बीकानेर, रविवार 9 फरवरी, 2025 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

चुनाव प्रचार के बीच में केजरीवाल ने महसूस कर लिया था कि वे हार रहे हैं!

अतः अपनी ''कॉन्स्टिटुएंसी'' (मूल वोट बैंक) को बांधे रखने के लिये सस्ती लोकप्रियता के लिये कई नई-नई रेवड़ियाँ बांटने का निर्णय लिया। पर, इससे उनका मूल वोटर (मध्यम वर्ग) उनसे और विमुख हो गया। यह मध्यम वर्ग केजरीवाल के साथ खड़ा रहा था, पिछले दो विधानसभा चुनाव में, जबकि संसदीय चुनाव में भाजपा को जीत दिलाई थी

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 फरवरी। विशाल संसाधनों से लैस और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आकर्षण शक्ति और सरकारी मशीनरी की सहायता से भाजपा ने शनिवार को दिल्ली में आम आदमी पार्टी (आप) को सत्ता से बाहर कर दिया, और 27 साल बाद राष्ट्रीय राजधानी में शानदार वापसी की।

आप के 10 वर्षों के लगातार शासन के खिलाफ इतना जबरदस्त असंतोष था कि उसके कारण पार्टी के सुप्रीमो अरविन्द केजरीवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और पार्टी के कई शीर्ष नेताओं को अपने ही गढ़ों में हार का सामना करना पड़ा, जिससे इस पार्टी के भविष्य पर बड़ा सवाल खड़ा हो गया, जो 2012 में विशाल भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के बाद लोगों के दिलो -दिमाग पर छा गई थी।

दिलचस्प बात यह है कि केजरीवाल, नई दिल्ली सीट पर लगभग 4000 वोटों से हार गए, और कांग्रेस के उम्मीदवार संदीप दीक्षित, जो दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के बेटे हैं, ने लगभग 3880 वोट हासिल किए। इस प्रकार, बेटे ने अपनी मां की हार का बदला 12 साल बाद लिया।

- यह उल्लेखनीय है कि स्वयं केजरीवाल अपनी सीट 4,000 वोटों से हारे और कांग्रेस के उसी सीट पर उम्मीदवार, पूर्व मु.मंत्री शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित को 3,880 वोट मिले और इस प्रकार उन्होंने 12 साल बाद अपनी मां की हार का बदला लिया।
- आप वो दस सीटें जीती, जहाँ मुस्लिम मतदाता निर्णायक थे। यानि, दिल्ली की लड़ाई मूलतः भाजपा व आप के बीच ही थी।
- दिल्ली की इस जीत ने यह भी साबित किया कि, ''मोदी का जादू'', जो लोकसभा चुनाव में घटता दिख रहा था, क्योंकि भाजपा उस चुनाव में बहुमत नहीं पा सकी थी, असल में अभी जीवित है तथा पुनः कारगर साबित हुआ।
- निर्मला सीतारमण ने भी बजट में मध्यम वर्ग को राहत देकर, भाजपा व मध्यम वर्ग के संबंधों को और मजबूत किया।
- आप के वरिष्ठ महारथी, केजरीवाल सिसोदिया, सौरभ भारद्वाज व सत्येन्द्र जैन भी चुनाव हारे।

राष्ट्रीय राजधानी में भाजपा का दिल्ली सरकार के खिलाफ जोरदार प्रचार अभियान, जो कथित रुप से केन्द्र सरकार द्वारा ई.डी. और अन्य एजेंसियों के कथित दुरुपयोग से बनाया गया था, ने राष्ट्रीय राजधानी में चुनावों का ध्रुवीकरण कर दिया, जिसमें, कांग्रेस पूरी तरह से मैदान से बाहर हो गई। यहाँ तक कि आप ने उन क्षेत्रों में 10 सीटें जीतीं, जहां मुस्लिम मतदाता निर्णायक थे, जो यह स्पष्ट रुप से दर्शाता है कि यह मुकाबला भाजपा और आप के बीच था, जिसमें आप अपने गढ़ की रक्षा करते हुए रक्षात्मक मुद्रा में थी।

मुस्लिम मतदाताओं ने भाजपा को हराने के लिए आप को भारी समर्थन दिया, और इस प्रक्रिया में कांग्रेस बाहर हो गई।

भाजपा ने 48 सीटें जीतीं, जबकि आप 22 सीटों पर विजयी रही और अन्य पार्टियां खाता भी नहीं खोल पाईं।

राष्ट्रीय राजधानी में भाजपा की बड़ी जीत से पीएम मोदी को भी नई ताकत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भजनलाल की दिल्ली में जनसभाओं वाली सीटों पर भाजपा जीती

प्रयागराज, 8 फरवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की जीत पर कहा कि लूट और झूठ वाले आप-'दा' की दिल्लीवासियों ने विदाई कर दी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार दिल्ली का विकास करेगी।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दिल्ली विधानसभा चुनावों में 11 सीटों पर भाजपा प्रत्याशियों के समर्थन में प्रचार किया था। इन सीटों में रिठाला से कुलवंत राणा ने 29616 वोटों से जीत दर्ज की है। शालीमार बाग से रेखा गुप्ता 29595

- मुख्यमंत्री ने 11 सीटों पर प्रचार किया था, सभी पर भाजपा उम्मीदवार जीते।

वोटों से जीती है। शकूरबस्ती से करनेल सिंह 20998 वोटों से जीते है। त्रिनगर से तिलक राम गुप्ता को 15896 वोटों से जीत मिली है। मोतीनगर से हरीश खुराना 11657 वोटों के मार्जिन से जीते है। गांधीनगर से अरविंदर सिंह लवली का जीत का मार्जिन 12748 वोटों का रहा है। कृष्णा नगर से डॉ. अनिल गोयल 19498 वोटों से जीते है। रोहिणी से विजेन्द्र गुप्ता 37816 वोटों से जीते है, वहीं द्वारका से प्रद्युम्मन सिंह राजपूत ने 7829 वोटों से जीत दर्ज की है। तिमारपुर से सूर्यप्रकाश खत्री

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस ने ग्यारह सीटों पर आप को हार दिलाई

क्या, आप-कांग्रेस गठबंधन, केजरीवाल की सरकार को बचाने में कामयाब होता?

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 फरवरी। आम आदमी पार्टी की हार के साथ ही उसका दिल्ली में 10 साल तक चला शासन आज समाप्त हो गया तथा भाजपा, 27 साल के अन्तराल के बाद, सत्ता में वापस आ गई।

पूर्व मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल तथा मनीष सिसोदिया, सौरभ भारद्वाज, सोमनाथ भारती, सत्येन्द्र जैन जैसे वरिष्ठ मंत्री तथा आप के अन्य कई वरिष्ठ नेता एवं मंत्री चुनाव हार गये।

निवर्तमान मुख्यमंत्री आतिशी कालकाजी सीट से रमेश बिधूड़ी को हराकर, चुनाव जीत गईं। आम आदमी पार्टी से जीतने वाली वे एकमात्र महिला प्रत्याशी हैं।

भाजपा से 4 महिला प्रत्याशी चुनाव जीती हैं।

भाजपा ने 70 सदस्यों वाले सदन की 48 सीटें जीतीं, जबकि आम आदमी पार्टी 22 सीटों पर रूक गई। त्रिकोणीय राजनैतिक लड़ाई की तीसरी पार्टी इस बार भी, लगातार तीसरी बार, कोई सीट नहीं जीत पाई।

रोचक बात यह है कि भाजपा को 45 प्रतिशत वोट, आम आदमी पार्टी को 43 प्रतिशत वोट मिले। कांग्रेस को मात्र 6 प्रतिशत वोट ही मिले, जो पिछले चुनाव से 2 प्रतिशत अधिक है।

- रोचक बात यह है कि भाजपा को 45 प्रतिशत वोट मिले, आम आदमी पार्टी को 43 प्रतिशत तथा कांग्रेस को 6 प्रतिशत, पिछली बार से दो प्रतिशत ज्यादा।
- अब तो इतनी कटु भावनाएं व क्रोध दोनों ओर हैं, पर, एक बार गठबंधन व सीट शेयरिंग की बात लगभग तय सी हो गई थी। पर, अंत में बात इसलिये टूटी कि, आप ने तीखी टिप्पणी की कि कांग्रेस एक ''स्पैन्ट फोर्स'' (ठंडी हुई आग है) तथा कांग्रेस को साथ लेने से वाटों में कुछ भी इज़ाफा नहीं होगा।
- केजरीवाल व उनके साथियों का यह आंकलन गलत था, जैसा कि ''रिज़ल्ट'' ने बताया।

प्रथम विश्लेषण के आधार पर कांग्रेस ने ग्यारह सीटों पर आम आदमी पार्टी की स्थिति खराब की। क्या, कांग्रेस-आप गठबन्धन केजरीवाल सरकार को बचाने में मदद कर सकता था। परस्पर दुर्भाव एवं शत्रुता जैसी स्थिति के बावजूद, दोनों पार्टियों के मिलकर चुनाव लड़ने तथा सीट शेयरिंग की दिशा में कोशिशें तो हुई थीं, लेकिन आम आदमी पार्टी का यह सोच बिल्कुल स्पष्ट था कि कांग्रेस दिल्ली में ''स्पैन्ट फोर्स'' (ठंडी हो चुकी आग) है तथा वोटों के मामले में वह उसकी (आप) कोई मदद नहीं कर सकती।

केजरीवाल एंड कम्पनी को अब अहसास हो गया है कि उनका आकलन गलत था।

आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविन्द केजरीवाल नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के प्रवेश वर्मा से चुनाव हार गये। दोनों को मिले वोटों में 4,089 का अन्तर रहा।

पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के पुत्र तथा कांग्रेस प्रत्याशी सन्दीप दीक्षित को मात्र 4,568 वोट मिले तथा वे, बहुत बड़े अन्तराल के साथ, तीसरे नम्बर पर रहे। इस प्रकार, अगर आप और कांग्रेस ने मिलकर चुनाव लड़ा होता, तो ऐसी सम्भावना थी कि, भले ही मामूली वोटों के अन्तर से ही सही, केजरीवाल जीत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ममता बनर्जी को समझ नहीं आ रहा, भाजपा की जीत पर खुश हों या दुःखी?

खुशी की बात तो यह है कि गैर-भाजपा गठबंधन का नेतृत्व संभालने में उनके मुख्य मुखर प्रतिद्वंदी केजरीवाल का सूरज अब डूब गया है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 फरवरी। दिल्ली चुनावों में भाजपा की शानदार जीत ने बंगाल में एक नया राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया है। इससे पश्चिम बंगाल में जहाँ भाजपा में भारी उत्साह पैदा हुआ है, वहीं, सक्रिय राजनीति के मैदान से आम आदमी पार्टी चीफ, अरविंद केजरीवाल का बाहर होना तथा चुनावों में कांग्रेस के विनाश ने ममता बनर्जी को प्रमुख स्थिति में खड़ा कर दिया है।

ममता बनर्जी लगातार भाजपा जैसी महाशक्ति को आगे बढ़ने से रोकने की अपनी क्षमता का ढिंढोरा पीटती रही हैं। उनकी इस क्षमता को अरविंद केजरीवाल ने अक्सर सार्वजनिक रुप से यह कहकर चुनौती दी थी कि विपक्ष को दबाने वाली भाजपा को रोकने की शक्ति उनमें केजरीवाल ही है। अब पार्टी के साथ-साथ उनकी व्यक्तिगत हार के बाद, भाजपा को टक्कर देने वाली अकेली ममता ही बचती हैं।

इसके साथ ही, ममता की चिंता का कारण, कांग्रेस के उत्तराधिकारी, राहुल तथा प्रियंका गांधी भी भाजपा के लिए घातक साबित नहीं हो पाए हैं। एक बार फिर उनकी प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। कांग्रेस पार्टी को अब किसी

- इस घटनाक्रम के बाद, ममता बनर्जी अपने आप को ''पोल पोज़िशन'' (अतिसुदृढ़ स्थिति) में महसूस कर रही हैं।
- पर, ममता बनर्जी यह भी जानती हैं कि केजरीवाल के जाने का प्रमुख कारण था, स्कैम, शराब काण्ड व शीश महल स्कैम। इस तरह के स्कैम तो बंगाल में कई हैं। अतः अगर दिल्ली में स्कैम केजरीवाल को ले बैठे तो ऐसा बंगाल में भी कभी भी हो सकता है।
- और अब तो स्थिति और विकट हो गई है, क्योंकि भाजपा कार्यकर्ता का मनोबल आसमान छू रहा है, बंगाल में।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अदालत के आदेश के बाद भी सेवा में नहीं रखने पर अवमानना के नोटिस जारी

जयपुर, 8 फरवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने अदालती आदेश के बावजूद चिकित्सा विभाग की महिला प्रोफेसर को साठ साल की उम्र के बाद सेवा में नहीं रखने पर प्रमुख चिकित्सा शिक्षा सचिव, उप निदेशक रवि शंकर और प्रिंसिपल अंजली कपूर को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है।

- दंत चिकित्सा की प्रोफेसर को 60 साल की उम्र में सेवानिवृत्त कर दिया। हाई कोर्ट ने 65 वर्ष की सेवानिवृत्ति की आयु के नियम के आधार पर पद पर बनाये रखने के आदेश दिये थे।

जस्टिस नरेन्द्र सिंह ने यह आदेश डॉ. सीमा चौधरी की ओर से दायर अवमानना याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए। याचिका में अधिवक्ता शालिनी श्योराण ने अदालत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कौन बनेगा दिल्ली का नया मु.मंत्री?

वैसे तो भाजपा के पांच महारथियों के नाम चर्चा में हैं, पर, क्या भाजपा कोई एकदम नया नाम देकर, फिर सबको चौंकायेगी?

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 फरवरी। भाजपा, विधानसभा चुनावों के लिये सीएम फेस की घोषणा न करने की परम्परा का निर्वहन करते हुए, अपनी इस मान्यता पर कायम रही है कि मुख्यमंत्री का निर्णय चुनाव परिणामों के बाद ही लिया जायेगा।

राष्ट्रीय राजधानी में 26 साल तक सत्ता से दूर रहने के बाद, भारतीय जनता पार्टी दिल्ली की सत्ता फिर से संभालने की स्थिति में आ गई है, क्योंकि शनिवार को घोषित हुये चुनाव परिणाम के ट्रैंड ने सत्तासीन आम आदमी पार्टी (आप) की हार के संकेत दे दिये हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसको विश्वास की विजय बताया है, वहीं अरविन्द केजरीवाल ने आप की पराजय स्वीकार कर ली है। दिल्ली के भाजपा मुख्यालय में जश्न शुरु हो गया है।

भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा, ''अरविन्द केजरीवाल और आप खत्म, टाटा-बाय बाय।'' उन्होंने कहा कि यह जीत दिल्ली के विकास के लिए मोदी की जीत है। यह मोदी की गांरटी और दिल्ली के कार्यकर्ताओं की जीत है। जहाँ वोटों की गणना और मिलान का काम अभी चल रहा है, वहीं भगवा पार्टी के दिल्ली कार्यालय में खुशियाँ मनाई जा रही हैं। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेव, केन्द्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा तथा भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वैजयंत पन्डा सहित, दिल्ली के वरिष्ठ भाजपा नेता प्रारम्भिक मीटिंग के लिये पार्टी कार्यालय में इकट्ठे हो गये हैं।

दिल्ली विधानसभा चुनाव, 2025 की मतगणना में एक जबरदस्त प्रतिस्पर्धी राजनैतिक परिदृश्य सामने

- पहला नाम दिल्ली के पूर्व मु.मंत्री साहिब सिंह वर्मा के पुत्र प्रवेश वर्मा का है, जिन्होंने केजरीवाल को 4,000 मतों से हराया है। इससे पूर्व प्रवेश वर्मा गत दो बार लगातार वेस्ट दिल्ली से सांसद निर्वाचित होते आये हैं।
- दूसरे महारथी विजेन्द्र गुप्ता, विधानसभा में विपक्ष के नेता हैं तथा तीसरी बार 37,000 वोटों से अपनी रोहणी सीट से जीते हैं। गुप्ता भाजपा के वरिष्ठ नेता हैं तथा विद्यार्थी जीवन से भाजपा की युवा राजनीति में सक्रिय हैं।
- तीसरा प्रमुख नाम ईस्ट दिल्ली से सांसद मनोज तिवाड़ी का है। हालाँकि, वे इस बार विधानसभा चुनाव नहीं लड़े हैं। वे विधानसभा चुनाव में भाजपा के प्रमुख स्थानीय वक्ता थे। परन्तु, उनका ''प्रोफाइल'' व पूर्वांचलवासियों पर मजबूत पकड़, भाजपा के लिये, आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में भी काफी मददगार साबित हो सकती है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)